सुप्रसिद्ध पेंटर अर्पणा कौर से शरद दत्त की खास मुलाकात

'मैंने पेंटिंग्स में वक्त को बांधने की कोशिश की'

अर्पणा कौर की अब तक विश्व भर में अनेक प्रदर्शनियां लग चुकी हैं। 1954 में जन्मी अर्पणा की कला के नायाब नमूनों को दिल्ली, मुंबई, चंडीगढ़ सहित विश्व के तमाम 'मॉडर्न आर्ट म्यूजियमों' में देखा जा सकता है। शोख रंग, प्रकृति की मुखरता, सामाजिक सरोकार और सूफियाना थीम अर्पणा कौर की विशेषताएं हैं। उनसे हुई बातचीत के मुख्य अंश :

■ आपका कला की तरफ रुझान कब और कैसे हुआ?

- जब तीन साल की थी, तभी दीवारों पर चाक और कोयले से काम शुरू कर दिया था। मां अजीत कौर लेखिका हैं। उन्होंने मुझे पूरी स्वतंत्रता दी कॅरिअर चुनने की, मगर सबसे ज्यादा आनंद मुझे रंगों में आता था। अब तो हर दिन रंग में डूबा रहता है और जिस दिन रंग न लगाऊं, वो दिन बिल्कुल बेकार है मेरे लिए।

■ आपकी औपचारिक ट्रेनिंग कब शुरू हुई?

- मैंने सोचा कि मैं बड़ी होकर अपनी मां का सहारा बनूंगी। अध्यापन करूंगी और उसके साथ-साथ पेंटिंग करती रहूंगी। कभी मेरे जेहन में नहीं आया कि मैं कभी फुलटाइम पेंटिंग भी कर पाऊंगी। दिल्ली में दो गैलरियां थीं, एक धूमीमल और दूसरी कुमार। यह बात 40 साल पहले की है। तब कोई 'ऑडियंस' नहीं थी आर्ट की, कोई खरीदार नहीं था। मीडिया में कोई लिखता नहीं था आर्ट के बारे में। मेरी यही कोशिश थी कि मैं रोजी-रोटी का जरिया कोई और रखूं, तो इसलिए मैंने 'लिटरेचर' में दाखिला लिया। लेडी श्रीराम कॉलेज में पढ़ ही रही थी कि तभी एक अखबार में विज्ञापन आया कि त्रिवेणी में एमएफ हुसैन युवा आर्टिस्टों के काम को प्रदर्शित कर रहे हैं । मैंने उनके पास डरते-डरते अपने तीन कैनवास भेजे। तीनों सिलेक्ट हुए। तीन-तीन लाइनें भी आ गईं अखबार में, जिसे देखकर कोई जर्मन 'काउंसलर' ढूंढ़ते-ढूंढ़ते घर आ गए। उन्होंने एक पेंटिंग खरीद ली, कुछ अखबारों में भी आ गया। सबने कहा 'सोलो एक्जीविशन' करो। पहला शो त्रिवेणी में किया। उसके बाद लाइफ थोड़ी बदलनी शुरू हो गई।

■ आपने किसी कॉलेज ऑफ आर्ट से ट्रेनिंग नहीं ली?

- सूजा की पत्नी मारिया सूजा ने त्रिवेणी में मेरा पहला शो देखा था। उन्होंने 1979 में लंदन में मेरा शो किया और बोलीं कि मैं तुम्हारा यहां एडमिशन करा देती हूं सेंट मार्टिंस कॉलेज ऑफ आर्ट में। उन्होंने मुझे स्कॉलरशिप दिलवाई। मारिया सूजा मुझे बहुत प्यार करती थीं पर मैं इतनी शर्मीली थी कि इंग्लैंड में दो महीने बिताकर ही वापस आ गई। 1980 में मेरी लाइफ में बहुत बदलाव आया, जब मैं मुंबई गई। मुंबई मक्का था, आर्टिस्टों के लिए। वहां चार-चार गैलरियां थीं।

■ आपका काम पारंपरिक भी है और आधुनिक भी। आप अपनी पेंटिंग्स में ज्वलंत विषय भी उठाती हैं और सूफीवाद को भी दिखाती हैं।

- लोग सोचते हैं कि महिला आर्टिस्ट रोने-धोने वाले विषयों पर ही काम करके संतुष्ट होती हैं लेकिन हम आज

की दुनिया में रहते हैं। पर्यावरण को लेकर मैंने 25 साल पहले काम शुरू किया, क्योंकि मेरी दिल्ली वो दिल्ली नहीं थी, जो मैंने बचपन में देखी थी। इसमें धीरे-धीरे भीड़-भाड़ बढ़ती जा रही थी। मैंने पर्यावरण पर बहुत सारी पेंटिंग्स बनाईं। 'ग्रीन सर्कल' और बहुत-सी ऐसी ही पर्यावरण वाली सीरीज। 1984 के दंगे इतना चौंका देने वाला अनुभव था कि उसकी पीड़ा को जेहन से निकालने के लिए मैंने पूरी एक सीरीज की, जिसे 1985 में अलकाजी साहब ने आर्ट हेरिटेज में प्रदर्शित किया। फिर वो मुंबई और कोलकाता गई। उस सीरीज में बहुत दर्द था। ऐसे ही वृंदावन गई थी 1987 में। वृंदावन रास और रोमांस की जगह है। वहां मैंने देखा कि दस हजार विधवाएं हैं। उन पर उन दिनों ज्यादा लिखा नहीं गया था। उससे मुझे इतना धक्का लगा कि मैंने उस पर एक सीरीज बनाई- 'विडोज ऑफ वृंदावन', जो अलकाजी ने 1988 में प्रदर्शित की। घर में शुरू से सूफियाना माहौल था। रोज बुल्लेशाह और गुरु ग्रंथ साहिब पढ़ा जाता था। अभी भी वह गुरु ग्रंथ साहिब है मेरे पास, जिसे मेरे दादाजी अपने सिर पर रखकर लाहौर से लाए थे। उसमें कबीर, फरीद, नामदेव और बहुत से संत थे। छत्तीस कवियों में से छह सिख और बाकी सब हिंदू, मुस्लिम, दलित कवि थे। वो एक रस-सा जेहन में उतर जाता है। फिर मैंने बीस साल पहले 'बॉडी इज जस्ट ए गारमेंट' नाम से कबीर की सीरीज की थी, जिसमें स्कल्पचर और पेंटिंग्स थीं। एक और थीम, जिसने मुझे अपनी तरफ बहुत खींचा, वो थी सोहनी-महिवाल।

■ आपकी पेंटिंग्स में जो दो चीजें हमें बहुत देखने को मिलती हैं, वो हैं 'टाइम ऐंड स्पेस।' उनके बारे में कुछ बताइए?

- समय मेरी सबसे पसंदीदा थीम है। टाइम एक 'अमूर्त सत्ता' है। जैसे रोज पल-पल या समय कम हो रहा है तो उसे आप कैसे रोक सकते हैं? कला और साहित्य ही समय को बांधने का काम करते हैं। आप तो एक दिन दुनिया से चले जाएंगे, आपके पीछे रह जाएगी आपकी कृति। अब आप टाइम को कैसे पेंट करें? दिन और रात और जिंदगी और मौत को कैसे पेंट करें? पंद्रह-सोलह साल पहले जेहन में ऐसे ही चीज बिजली की तरह कौंधी। एक पीली औरत, जो उम्र का धागा कात रही है और साथ में एक काली महिला जो काट रही है दिन और रात, या जिंदगी और मौत... . पेंटिंग में इससे एक 'टेंशन-सी' बनती है। मैंने पेंटिंग्स में वक्त को बांधने की कोशिश की। मेरी 'डे ऐंड नाइट' सीरीज पंद्रह-सोलह साल से चल रही है। सोहनी-महिवाल, नानक, बुद्ध की सीरीज अभी भी चल रही है।

■ आपकी पेंटिंग्स के रंग बहुत ही चटकीले और शोख होते हैं, जैसे बुद्ध को आपने नीले में पेंट किया, गुरु नानक को हरे में पेंट किया। तो रंगों की जो कशिश है, उसके बारे में हमें कुछ बताएं?

- शुक्रिया कि यह बात आपने नोटिस की कि गुरुनानक को मैंने हरे रंग में पेंट किया। मैंने बचपन में

जब मेरी पेंटिंग्स बिकनी शुरू हुईं तो जैसे औरतें गहने और कपड़े खरीदती हैं, मैंने मिनिएचर पेंटिंग खरीदनी शुरू कर दी, क्योंकि वो मेरी प्रेरणा है

गुरुग्रंथ साहिब में एक लाइन पढ़ी थी कि 'नानक नाम मिला ता जीवा, तन मन हरया हुए।' यह पंक्ति मेरे जेहन में उतर गई। तो जो ये रंग है ये 'एलिमेंट ऑफ सरप्राइज' होते हैं। जैसे कि रोरिक की पेंटिंग्स आप देख लीजिए। उसने मैजंटा इस्तेमाल किया है स्काई ब्लू के साथ। वो भी उन दिनों, जब कोई मैजंटा सोच नहीं सकता था स्काई ब्लू के साथ। मिनिएचर पेंटिंग्स में आप देख लें, जैसे 'हिल्स ऑफ पंजाब'। उस वक्त गोमूत्र से पीला रंग बनता था, पन्ने से हरा रंग बनता था। लोग प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल करते थे और वो रंग गहनों की तरह चमकते थे। मेरी इन सब पर बहुत 'स्टडी' है। मेरे पास बहुत बड़ा कलेक्शन है असली मिनिएचर पेंटिंग्स का। जब मेरी पेंटिंग्स बिकनी शुरू हुईं तो जैसे औरतें गहने और कपड़े खरीदती हैं, मैंने मिनिएचर पेंटिंग खरीदनी शुरू कर दीं, क्योंकि वो मेरी प्रेरणा है।

■ आपको सोहनी-महिवाल की प्रेरणा भी वहीं से मिली?

- दो सौ साल पहले नैनसुख ने सोहनी पेंट की, जो कि जयपुर म्यूजियम में है। मैंने वही सोहिनी का स्वीमिंग का 'पोस्चर' लेकर उसे 'कंटेंपराइज' किया। एक सोहनी-महिवाल की पेंटिंग में 'प्लग' भी यूज किया है कि उन दोनों के बीच से एक 'प्लग' जा रहा है जैसा कि सूफी ट्रेडिशन में होता है कि उनका प्यार उन्हें कहीं न कहीं रूहानियत से जोड़ता था।

■ आपकी एक पेंटिंग है योगिनी की। उसके बारे में आपने बताया कि जब आप वृंदावन गईं, तब वहां से आपको इसकी प्रेरणा मिली?

- वहां तो मैंने विधवाएं देखीं। योगिनी के लिए मैंने सोचा कि आध्यात्मिकता सिर्फ पुरुषों तक ही सिमित नहीं है। उसमें कई औरतें भी हैं। मीरा को देखें, महादेवी को देखें। मैंने योगियों को पेंट किया है तो सोचा कि मुझे योगिनियों को भी पेंट करना चाहिए, क्योंकि अध्यात्म में औरतों की बराबर की भागीदारी है।

■ आपने एक दिलचस्प किस्सा बताया था कि जब आपने हिरोशिमा परमाणु हमले पर एक पेंटिंग की सीरीज बनाई तो आपको जापान के समाचार पत्रों में 'मिस्टर कौर' कहा गया। उसके बारे में कुछ बताएं?

- जी हां। वो बड़ा दिलचस्प किस्सा है। मैं आज भी 6 और 9 अगस्त को आंखें बंद करके, उस दुर्घटना में मरे लोगों के लिए प्रार्थना करती हूं और यह काम मैं छह साल की उम्र से कर रही हूं। 1995 में परमाणु हमले के पचास साल पूरे होने पर मेरे पास 'हिरोशिमा म्यूजियम ऑफ मॉडर्न आर्ट' से मुझे 1986 में त्रिनाले अवार्ड मिला। इसके सब जज बाहर के थे। उन्हें यही लगा कि अवार्ड 'मिस्टर अर्पणा कौर' को मिल रहा है। खैर, जब दस आर्टिस्ट चुने गए पूरी दुनिया से तो उनमें मेरा भी एक नाम था और मैं अकेली भारतीय थी। चिट्ठी में अपना नाम 'मिस्टर अर्पणा कौर' देखकर मैंने सोचा कि अगर मैंने इन्हें बता दिया कि मैं एक महिला हूं तो कहीं ये मेरा नाम हटा न दें। मैंने उस इवेंट के लिए 12 फुट की पेंटिंग बनाई। जब उसे म्यूजियम में रखा गया तो मुझे बुलाया गया। जब मैं हवाई जहाज से उतरी तो उन्हें पता चला कि अर्पणा कौर मिस्टर नहीं मिस है।

■ आपकी पेंटिंग्स पूरी दुनिया में मशहूर हैं। जब आपको पता चलता है कि आपकी पेंटिंग्स 'ऑक्शंस' में इतनी महंगी बिकीं या बड़े-बड़े म्यूजियमों में आपकी पेंटिंग्स लगाई गईं तो आपको कैसा लगता है?

- सच कहूं तो मेरी एक ही कमजोरी है म्यूजियम कलेक्शन की। किसी के प्राइवेट कलेक्शन से इतना पता नहीं लगता, जितना किसी म्यूजियम कलेक्शन से। जैसे कि ब्रुकलिन म्यूजियम से मुझे चिट्ठी आई कि हमारे पास आपका 1980 का एक कलेक्शन है। हम उसकी एक तस्वीर भेज रहे हैं यह जानने के लिए कि क्या यह आपका ही काम है? यहां नेशनल गैलरी में मेरी आठ-दस पेंटिंग्स हैं। ■■